Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 135-141

शशिप्रभा शास्त्री के कथा–साहित्य मे नारी की भूमिका

[1]भगवती जायसवाल, [2]डॉ. श्रद्धा हिरकने
[1]शोधार्थी, [2]सह प्राध्यापक
[1,2]हिन्दी विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय , नया रायपुर (छ.ग.)

सारांश

समाज और साहित्य एक–दूसरे के पूरक हैं। इसलिए समाज में जो भी चीजें घटित होती हैं उस युग में उसका प्रभाव साहित्य में भी दृष्टिगोचर होता दिखाई देता है। साहित्य जीवन के उन पलों कों रूपायित करनें में सक्षम है जो मनुष्य के अंतर्मन के साक्षी होते है। आज का वैज्ञानिक और आधुनिक युग प्रतियोगिता का युग हैं भारतीय समाज में नारी नें इस प्रतियोगिता में भागीदारी बींसवी सदी के के उत्तरार्ध्द से ही निभाना शुरू किया है साहित्यकारों ने नारी चरित्रों का वर्णन अपने साहित्य में सूक्ष्मता से किया है उपन्यासों में चित्रित नारी की आदर्शवादी छवि में सभ्यता औार संस्कृति के बदलाव के साथ अंतर आया है। मनोविश्लेषण यह प्रमाणित करता है कि कोई भी आदर्श स्थायी नहीं होता ,मानव जीवन नये सिध्दाँतों को अपनाता रहता है।

डॉ. शशिप्रभा शास्त्री उन महिला लेखिकाओं में से है जिन्होंने पाठको को सामाजिक यथार्थ व नारी जीवन से संबंधित प्रासंगिक कथा साहित्य दिए है उन्होंने अपने कथा साहित्य में निम्नवर्गीय, मध्यवर्गीय तथा उच्चवर्गीय हर वर्ग की नारी पात्रों का चित्रण किया है।

प्रस्तावना

पुरातन काल से लेकर वर्तमान काल व आधुनिक काल तक नारी से संबंधित व नारी की भूमिका पर लेख लिखा जाता रहा है व आगे भी लिखा जाता रहेगा । इस प्रकार का नारीवादी साहित्य पुरूष साहित्यकारों ने भी लिखा और महिलाओ लेखिकाओं ने भी। इन साहित्यकारों द्वारा नारी के विभिन्न रूपों , विभिन्न पहलूओ पर वृहद् तथा सूक्ष्मता से लिखा गया । साहित्यकारों ने नारी चरित्रों का अंकन उसके मन के सूक्ष्म और स्थूल रूप में विभिन्न आधारों पर किया है। समाज में

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 135-141

व्याप्त मान्यताएँ और चुनौतियाँ नारी के जीवन धारा को परिवर्तित करने में सहायक हुई है। हमारे समाज में नित नए उतार –चढ़ाव व परिवर्तन होते आ रहे है जिसका प्रभाव साहित्य पर दृष्टिगाचर होना लाजिमी है

प्रत्येक साहित्यकार तत्कालीन युग से प्रभावित होकर अपनी रचना करता है समाज में व्याप्त समस्याओं का चित्रण करता है। समाज की हर नयी परिस्थितियों को वाणी देने में वह सतर्क रहता है परिवर्तनशील समाज में होने वाली सारी की सारी घटनाएँ साहित्य का विषय बन जाती है आज हमारे समाज में नैतिक आदर्श पतन की ओर उन्मुख है सदियों से चली आ रही सामाजिक मान्यताएँ विलुप्त होते जा रही है।

इस विघटन ने कई प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया है। परिवारों में बिखराव की स्थिति निर्मित हो रही है। रिश्तें नातों में टकराहट व तनाव पैदा हो रहे है। सामाजिक मूल्यों का हास हो रहा है मानवीय संबंधों व रिश्तों में आए दिन परिवर्तनों का दुष्परिणाम स्त्रियों को भोगना पड़ रहा है। अपने भोगे हुए यथार्थ को चित्रण करने में नारी ही सक्षम और सशक्त दिखाई पड़ती है ।

अनेक लेखिकाओं नें बेहद ईमानदारी के साथ समाज में हो रहे बदलावों का अपने कहानियों व उपन्यासों में चित्रण किया है ऐसी सशक्त महिला लेखिकाओं की कोटि में आनेवाली है शशिप्रभा शास्त्री । इन्होने सन् 1956 से लेकर सन् 2000 के बीच की अवधि तक लेखन कार्य किया है। इनके रचित साहित्य में कुल सोलह उपन्यास आठ कहानी संग्रह व 300 से अधिक मौलिक कहानियाँ है। इनके अधिकांश उपन्यास व कहानियों मं नारी की भूमिका पर वृहद रूप से प्रकाश डाला गया है।

शशिप्रभा शास्त्री के कहानी साहित्य में नारी की भूमिका :–

शशिप्रभा शस्त्री के कहानी साहित्य में नारी चित्रण प्रमुख रूप से रहा है। इस समाज में रहकर भी नारी अपने अस्तित्व के लिऐ सदियों से संघर्ष करती आ रही है और आज भी संघर्ष जारी है। इस विषय में उनकी कहानियों हमें यथार्थ जीवन का चित्रण कराती आ रही है। उनकी कहानियों के माध्यम से हमें सामाजिक यथार्थ जीवन में नारी की भूमिका उनकी समस्यायें व समाधान का पता

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 135-141

चलता है। नारी जीवन या नारी मन से शास्त्री जी पूरी तरह से जुड़ी हुई है उनकी कहानियों के नारी पात्र हमारे समाज, हमारे आस–पास की है, उनकी समस्याओं को जान–पहचानकर शास्त्री जी ने अपनी कहानियों के नारी पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। नारी की मनोंवृत्ति तक लेखिका ने पहूँचने का प्रयास किया है। लेखिका के शब्दो में ये कहानियाँ मात्र स्याही और कलम से लिखी नहीं गई है, उनके अक्षरों के अंश–अंश में खून के जर्रे बिखरे हुए है हर कहानी मेरे मनोद्वेग और प्रतिक्रिया का सही–सही दस्तावेज है।''[1]

शास्त्री जी की कहानियों के पात्र इतने प्रमाणिक है कि पाठक उनकों पढ़कर अपने घरों में झाँकता है।

शशिप्रभा की लगभग 300 कहानियाँ संकलनों में विभाजित है।

इनके कुछ कहानियाँ निम्न हे जिनमें नारी की भूमिका का वर्णन हैं

(1)खुली पलकें :–

खुली पलकें वीणा और मोहिनी नाम के दो महिलाओं के अकेलेपन की कहानी है। वीणा कॉलेज में प्राध्यापक है चौबीस बरस की उम्र में उसने सर्विस ज्वाइन की पढ़ाते–पढ़ाते सोलह वर्ष कैसे बीत गये पता ही नहीं चला । चालीस वर्ष का यह लंबा सफर उसने अकेले ही पार कर लिया ह। लोग उसको सुखी समझते होगें पर '' यह भी कोई जिंदगी है सुबह उठे खाना बना लिया या बनवा लिया । कॉलेज में पढ़ा आए, इधर–उघर घूम लिया ,कभी कुछ पढ़ लिया और सो गए ''[2] वीणा ने शादी नहीं की । इसका आज भी उसे अफसोस है इतने दिनों बाद वह इस निष्कर्ष पर पहँची है कि हर स्त्री को ठीक उम्र पर शादी कर लेनी चाहिए । अपनी तुलना वह मोहिनी से करती है उसकी कम से कम लड़का न सही तो दो लड़कियाँ तो है।

मोहिनी शादी करके पछता रही है मोहिनी के शादी के तीन दिन बाद ही उसके पति को मिर्गी का दौरा पड़ा था । उसकी जिंदगी नर्क जैसी बन गयी थी इससे तो अच्छा होता वह बिना विवाह के रहती । दिन–रात की खटपट,लड़ाई–झगड़ा ,वीरेन्द्र मोहन का पागलखाने से निष्कासन, दो बच्चो का जन्म न सुख न चैन, उसकी जिंनगी इन सब में कटती चली गयी । हेडमिस्ट्रेस के जिस पद पर वह थी वह उसके लिए वरदान नही अभिशाप जैसा था अचानक मिस्टर दत्त को देखकर वाणी किलकी कि इतने दिन वो कहाँ गायब थे । मिस्टर दत्त को देखकर वीणा

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 135-141

अपने घर में ले आती है क्योंकि वह कुंवारी है मोहिनी चाह कर भी ऐसा नही कर सकती । दोनो की ही भावना तृप्त नहीं है। फर्क सिर्फ इतना है कि एक शादीशुदा है तो दूसरी कुंवारी ।

स्त्री विवाह करे तो भी कई समस्या न करे तो भी । खुली पलकें कहानी में वीणा और मोहिनी के अकेलेपन की त्रासदी का चित्रण लेखिका ने किया है ।

(2)बीच की कड़िया :–

यह कहानी कामकाजी नारी के जीवन पर अधारित है अच्छे घर की बहुओं की तरह सुषमा सुबह जल्दी उठकर झाड़ू–बुहारे से लेकर अपने दोनों बच्चियों को नहलाती धुलाती थी और खाना बना कर '' मैचिंग साड़ी ब्लाउज के साथ रंगों का जादू बिखेरती , लोहे के घोड़े की पीठ पर पड़ लगाती हुई पाँच बजे शाम तक के लिए दफ्तर में चली जाती । ''[3] सुषमा पोने दो सौ रूपये कमाती तो उसका पति अजित सिर्फ पचहत्तर रूपयें पर अटका था । अपनी उन्नति के लिए उसे मिस्टर खोसला की लल्लो चप्पो करना आवश्यक था । अपने घर में उनके सम्मान में पार्टी आयोजित करती है। मि. खोसला के सामने अजित स्वयं को गया गुजरा समझ रहा था इतने बड़े आदमी का इस छोटे से मामूली घर में सरलता से चले आना किसी भी पति के मन में शंका के बीज बो सकता था । परंतु अजित खमोश रहा करता था इतना ही नहीं वह अपनी पत्नि के कामों में हाथ बँटाता था । घर के कामा में अपनी पत्नि की मदद करता था।

सुषमा सवेरे फिर खिले हुए फूल की तरह उठती और घर के कामों को निपटा कर अपने काम पर चली जाती । उसने अजित का कभी अपमान नहीं किया । उसके कम तनख्वाह पर कभी उसका मजाक नहीं उड़ाया । मिसेज खोसला अजित से कहती है । सुषमा उसके पति पर डोरे डाल रही है इन बातों को सुनकर अजित सोचने लगता है। उसकें मन में जब कशमकश चलती है तब सुषमा उसे जो कहती है उससे काम करने वाली महिलाओं पर की गई टिप्पणियों का जवाब मिल जाता है। '' अपने आफिस में सबसे हँसकर बात करती हूँ , सलीके से रहती हूँ पार्टी पिकनिक मिस नहीं करती काम करते समय औरत आदमी का भेद नहीं मानती हूँ । खूब डटकर मुस्तैदी से काम करती हूँ। ''[4] लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि लोग उसे शरीफ घराने की न समझे। बीच की कड़िया कहानी में एक ऐसी नौकरीपेशा महिला की कहानी है जो अपने पति से ज्यादा कमाती हैं अपनी जिम्मेदार को बखूबी निभाती है फिर भी उसे लोगों की बातें व ताने सुनने पड़ते है।

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में नारी की भूमिका :–

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 135-141

शशिप्रभा शस्त्री ने अपने उपन्यासों में प्रमुखतः नारी को केन्द्र में रखकर लिखा है नारी के विविध रूपों का वर्णन उनके उपन्यास मे ंहै स्त्री मन के हर पहलू को छूआ है। नारी जीवन में व्याप्त अलग–अलग प्रकार की समस्या को रेखांकित किया है और इस प्रकार नारी चित्रण करते हुए विभिन्न वर्गो की नारियाँ जैसे शिक्षिका ,क्लर्क,गृहिणी ,प्राचार्य,नौकरानी ,वेश्या आदि के जीवन व उनकी समस्याओं का उल्लेख किया है। उनके कुछ उपन्यास निम्न है–

(1) हर दिन इतिहास :– नारी का उदात्त रूपः–इस उपन्यास में एक ऐसी नारी का चित्रण है जो दूसरों के लिए अपनें आप को तपा देती है

लखनऊ के बाबू जगतपाल मित्तल अपनी पत्नी के देहांत के बाद अपने तीनों बच्चे महेश ,वर्तिका और रमेश की परवरिश बहुत अच्छे से करते है महेश मंदबुध्दि था रमेश उम्र में बहुत छोटा था अपनी तीनों संतानों में उन्हें वर्तिका पर अधिक विश्वास तथा गर्व था । उनकी दवाईयों की दुकान थी साथ ही शहर के प्रसिध्द कालेज के मैनेजर भी रहे उनका सपना था कि उनके बच्चे अच्छे से पढ़कर ऊँची शिक्षा पाये । पिता के देहांत के बाद वर्तिका घर की जिम्मेदारियों को निभाते हुए उच्च शिक्षा प्राप्त कर उसी कालेज में राजनीति शास्त्र की विभागाध्यक्ष नियुक्त होती हैं। अपने बड़े भाई की शादी गौरी से करवाती हैं और अपने छोटे भाई को अपने प्रयासो से नौकरी दिलवाती हैं। एन. सी. सी. कैम्प में भाग लेने जब वह ऊँटी जाती हैं तब उनकी मुलाकात शांतनु शर्मा से होती हैं उसकी ओर वह आकर्षित होती हैं। रमेश की शादी उसके बाबूजी द्वारा तय किये गए रिश्ते से करवाती हैं। बाद में उसे शांतनु शर्मा की सच्चाई पता चलती है कि वह शादीशुदा तथा दो बच्चो का बाप होकर उसे धोखे में रख रहा था यह सुनकर उसे धक्का लगता हैं।

रमेश के बच्चे हो जाते है वर्तिका का समय कैसे बीतते गया उसे पता ही नही चला । वर्तिका दुकान बेचकर नई कोठी को बनवाती हैं। रमेश अपने बेटे अरविंद को वर्तिका के पास रहने भेज देता हैं। नये घर मे महेश की मृत्यु हो जाती हैं। अरविंद किरण से अपना प्रेम बताकर इस रिश्ते के लिये किरण के परिवार की सम्मति भी बताता है और अपने माता–पिता को मनवाने का जिम्मा बुआ पर थोपता है। अरविंद के विवाह की पूर्ण जिम्मेदारी वर्तिका निभाती है

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 135-141

वर्तिका इन व्यस्तताओ में डॉ. सिन्हा के पत्नी के निधन का संताप व्यक्त करने कभी जा नही पायी । एक दिन स्वयं डॉ0 सिन्हा वर्तिका से मिलने आते हैं तो वर्तिका संताप प्रकट करना चाहती है ।पर डॉ. सिन्हा उसे रोकते हैं कि वे बीती बातो की चर्चा नही करना चाहते हैं " अब तुम्हे भी कोशिश करनी होगी किसी ईमानदार शख्स के करीब आना होगा। जो तुम्हारी जिंदगी को व्यवस्था देने में कामयाब हो सके ।"[5] वह सारा जीवन दुसरो के बारे में सोचती रही सहारा देती रही अतः वह अपने सुख ,दुख बाँटने एकांगिता को दुर करने डॉ. सिन्हा से जुड़ती हैं।

उपसंहार

शशिप्रभा शास्त्री संवेदनशील साहित्यकार हैं। उनके कहानी एवं उपन्यासों में तथ्य की वैविध्यता है। अपनी कृतियो में यथार्थवादी दृष्टिकोण से समाज का चित्रण करती पायी जाती हैं।

इनके कथा साहित्य में नारी के सभी रूप और अवस्थाओं का चित्रण मिलता है नारी जीवन की व्यथा के बहुत सारे खुबसुरत चेहरो , निष्कपट आस्थाओं, पवित्र आचरणों और अनोखी दृढ़ता से युक्त ये नारिया अनंत अभिशाप भोगती नजर आती हैं।

भारतीय समाज में नारी की स्थिति का मुल्यांकन कर उनकी मुक्ति के लिये अपने लेखन द्वारा सतत् कार्यरत रही नारीवादी चिंतन ही आपके कथासाहित्य में विद्यमान रहा है। नारी मन की भावनाओ को अभिव्यक्त करने में भी आप सफल रही हैं। एक स्वस्थ समाज के लिए पुरूष एवं स्त्री की समानता को स्वीकारती हैं। अतः नारी के व्यक्तित्व निर्माण में उसे विद्रोह करने वाली भी बना देती हैं। शास्त्री जी का कथा साहित्य नारी केन्द्रित होते हुए भी पुनरावृत्ति का एहसास नही देता है, इनकी हर कहानी अनोखी है, नारी के जीवन , नारी के संघर्ष एवं नारी उत्कर्ष से संबंधित शायद ही कोई पक्ष उनसे अछुता रहा हो

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.शास्त्री डॉ शशिप्रभा (1985)– एक टुकड़ा शांतिरथ, प्रतिभा प्रतिष्ठान

2.शास्त्री डॉ शशिप्रभा(1969)– धुली हुई शाम , साहित्य सदन, देहरादून

Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 | www.iircj.org
Volume-2 | Issue-12 | December - 2024 | Page 135-141

3.शास्त्री डॉ शशिप्रभा(1969)– धुली हुई शाम , साहित्य सदन, देहरादून

4.शास्त्री डॉ शशिप्रभा(1969)– धुली हुई शाम , साहित्य सदन, देहरादून

5.शास्त्री डॉ शशिप्रभा(1995)–हर दिन इतिहास

6. शास्त्री डॉ शशिप्रभा(1969)– धुली हुई शाम कहानी संग्रह
7. चांदगुडे डॉ. कविता (2012)– शशिप्रभा शास्त्री का कथा साहित्य , अमन प्रकाशन ,कानपुर
8. शास्त्री डॉ शशिप्रभा (1995)– हर दिन इतिहास , वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली
9. दिगंबर राव मोरे डॉ. रेणुका (2007)–शशिप्रभा के उपन्यासो में नारी संवेदना , अलका प्रकाशन कानपुर
10. भगवानराव डॉ. देशमाने पार्वती(2006) – डॉ शशिप्रभाः व्यक्तित्व एवं कृतिव, अन्नपूर्णा प्रकाशन , कानपुर
11. वी. एस डॉ. अम्बिली (2017)– शशिप्रभा के कथा साहित्य में नारी विमर्श, रोली प्रकाशन , कानपुर
12. सुर्यवंशी डॉ. विजयकुमार (2017)– उपन्यसकार शशिप्रभा , विनय प्रकाशन, कानपुर